फलदीपिका

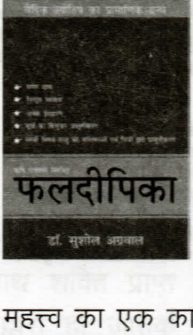

ऋषि मन्त्रेश्वर विरचित 'फलदीपिका' एक अनमोल वैदिक ज्योतिषीय ग्रन्थ है, जिसमें लयबद्ध संस्कृत में लिखित 28 अध्याय हैं। इस ग्रन्थ का ज्योतिषीय शास्त्रों में उच्च स्थान है। फलदीपिका में सभी ज्योतिषीय पहलुओं का व्यापकता और व्यवस्थित प्रकार से वर्णन है। फलदीपिका के अत्यधिक महत्त्व का एक कारण यह भी है कि इसमें ऋषि मन्त्रेश्वर ने न केवल ऋषि पराशर आदि द्वारा विरचित कृतियों का सार प्रस्तुत किया है, बल्कि गोचर आदि जैसे नवीन विषयों को भी सम्मिलित किया है। फलदीपिका निसन्देह सभी ज्योतिषियों के लिए एक अनिवार्य ग्रन्थ बन गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक महोदय ने श्लोकों के सटीक अनुवाद के अतिरिक्त हिन्दी भाषा की सरलता पर भी बहुत ध्यान दिया है। इस पुस्तक में श्लोकों में वर्णित योगों की बिन्दुवार रूप में प्रस्तुतीकरण पाठकों के लिए अवश्य ही लाभदायक होगा। श्लोक के सार एवं योगों की संरचित प्रस्तुति के साथ–साथ उदाहरणों के माध्यम से अवधारणाओं की सरल व्याख्या पर बहुत जोर दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रबुद्ध लेखक ने श्लोकों में वर्णित लम्बे–लम्बे प्रकरणों की नीरसता को समाप्त करते हुए उनको तालिकाबद्ध करके आकर्षक प्रस्तुतीकरण किया है। श्लोक के सार और टीका को अलग–अलग लिखा है जिससे श्लोक का अर्थ समझने में कोई संशय उत्पन्न न हो। टीका में अनेक उदाहरण और गणनाएं दी गई हैं जिससे शास्त्रीय योगों को समझने में सरलता हो।

आशा है कि यह कृति प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और ज्योतिषियों के लिए लाभदायक होगी। अंग्रेजी भाषा में यह पुस्तक पहले से है और अब यह पुस्तक हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध है।

लेखक : डॉ. सुशील अग्रवाल
मूल्य : **475/– पृष्ठ** : 444
प्रकाशक : अग्रवाल पब्लिशर्स
H2/132, महावीर एन्क्लेव,
नई दिल्ली, फोन नं.:, 011–25053154